2019 का भारत: संभावनाएं एवं चुनौतियाँ

लेखक-एम.के. नारायणन(पूर्व राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार और पश्चिम बंगाल के पूर्व राज्यपाल)

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न-II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध) से संबंधित है।

द हिन्दू

31 जनवरी, 2019

"भारत को मुश्किलों भरी एक बाहरी और आंतरिक स्थिति का सामना करना पड़ सकता है। इसलिए इसे कूटनीतिक मोर्चे पर अधिक निपुणता दिखाने की जरूरत है।"

जैसा कि हम जानते हैं इस वर्ष भारत आम चुनाव की तैयारी कर रहा है, जहाँ सभी संकेत 2019 में भारत के लिए एक कठिन वर्ष होने की ओर इशारा कर रहे हैं। यह कहना मुश्किल होगा कि इससे चुनाव परिणाम पर सीधा असर पड़ेगा या नहीं, लेकिन देश को अप्रत्याशित घटनाक्रम के प्रति सचेत रहने की आवश्यकता है।

अगर हम ध्यान दें तो पाएंगे कि इस वर्ष वैश्विक दृष्टिकोण उदासीन है। वैश्विक विकार प्रमुख अनिवार्यता है। एक वैश्विक नेतृत्व निर्वात अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था को नियंत्रित करने वाले नियमों के बारे में अराजकता के लिए अग्रणी है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की कथनी और करनी विशेष रूप से चीन और रूस से मजबूत जवाबी प्रतिक्रियाओं को उकसाती है। अमेरिका के उपराष्ट्रपति माइक पेंस का अक्टूबर, 2018 में चीन पर शब्दों का हमला, कई विश्व नेताओं के अनुसार, एक नए शीत युद्ध की शुरुआत का संकेत है। इसके अलावा, ट्रम्प ने रूस के साथ एक प्रमुख हथियार नियंत्रण संधि से बाहर निकलने की धमकी भी दी है। साथ ही रूस ने मजबूत अवरोध के निर्माण की बात करता रहा है। इसलिए शीत युद्ध 2 अब वास्तविक लगने लगा है।

विभिन्न मुद्दों पर

सभी राष्ट्र आज दुनिया भर में क्रॉस-उद्देश्यों पर काम कर रहे हैं। रूस सख्ती से एशिया और यूरेशिया में अधिक प्रभाव के लिए कार्य कर रहा है। जिसके लिए इसने चीन के साथ अपनी साझेदारी को प्रगाढ़ किया है और जापान और दक्षिण कोरिया के साथ संबंधों को बढ़ाया है। अजोव के सागर (रूस द्वारा यूक्रेन के जहाजों की जब्ती के बाद)में बढ़ते तनाव रूस और पश्चिम के बीच एक बड़े टकराव का कारण बन सकते हैं।

चीन एशिया में अपनी स्थिति मजबूत कर रहा है। रूस के साथ अपनी रणनीतिक साझेदारी के अलावा, चीन जापान के साथ भी संबंध सुधारने में लग गया है। आज चीन का बेल्ट और रोड इनिशिएटिव चीन के शस्त्रागार में सबसे शक्तिशाली हथियार बन गया है, जिसमें वियतनाम और जापान इस अवधारणा का समर्थन भी कर रहे हैं। जिसके बाद भारत एशिया में अलग-थलग दिखाई दे रहा है।

दुनिया के अधिकांश देशों के लिए 2018 के दौरान आर्थिक हिस्से बेहद चुनौतीपूर्ण साबित हुए है। सबसे चुनौतीपूर्ण, अमेरिकी-चीन व्यापार युद्ध को एक दर्शक के रूप में देखना रहा है। इस व्यापार युद्ध से अत्यधिक अस्थिर स्थिति पैदा हो गई और स्थिति कमजोर चीनी अर्थव्यवस्था के संकेतों से और गंभीर हो गई। 2019 की शुरुआत में, यह स्पष्ट हो गया है कि राजनीति दुनिया व्यापार के साथ संघर्ष कर रही है। इसलिए, सामान्य आर्थिक गणना का बाधित होना वाजिब है।

वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए ब्रिटेन की वित्तीय संपत्तियों में गिरावट और ब्रेक्सिट के बाद पाउंड स्टर्लिंग के साथ-साथ चीन की अर्थव्यवस्था की बढ़ती नाजुकता के संकेत, नई चिंताएं हैं। अमेरिका के लिए भी यह संभावना व्यक्त की गयी है कि उसका विकास भी लंबी अवधि तक धीमा रहने वाला है। इसलिए भारत भी इन रुझानों से अछूता रह जाये, ऐसी उम्मीद करना मूर्खता होगी।

रूस, जापान के साथ संबंध

भारत की विदेश नीति में व्याप्त चिंताओं के कारण रूस और जापान के संबंध फिर से कायम होते दिख रहे हैं। रूस-चीन रणनीतिक संबंध और चीन-जापान संबंधों में हाल की गर्माहट दोनों देशों के साथ भारत के संबंधों को प्रभावित कर सकती है। भारत और रूस भारत और जापान के नेताओं द्वारा सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित की गई गर्मजोशी के बावजूद, इन दोनों देशों के साथ हमारे संबंधों का चरित्र परिवर्तन से गुजर सकता है। हालांकि, यह परिवर्तन किस हद तक होगा, अभी देखा जाना बाकी है। लेकिन, यह स्पष्ट है कि भारत को अपनी राजनयिक पूंजी का एक बड़ा हिस्सा खर्च करने की आवश्यकता होगी ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि संबंध किसी भी हद तक कम न हों।

चीन के साथ संबंधों को प्रबंधित करना भारत की सर्वोच्च प्राथमिकता होगी। भारत-चीन संबंधों को एक सतह के रूप में

चिह्नित किया गया है, लेकिन यह एशिया में और उससे आगे भी एक आंतरिक संघर्ष है। वुहान स्पिरिट, भले ही भारत-चीन संबंधें के संबंध में कुछ भी नहीं बदला है, सिवाय इसके कि विवादित भारत-चीन सीमा पर कोई बड़ी चीनी घुसपैठ नहीं हुई है।

चीन की पहुँच

2018 में, चीन ने चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे (CPEC) की तर्ज पर चीन-म्यांमार आर्थिक गलियारा बनाने के लिए कुछ कदम उठाए थे। हिंद महासागर में भारत की स्थिति को चुनौती देने के लिए चीनी नौसेना भी तैयार है। चीनी पनडुब्बियां पहले से ही भारत के इर्द-गिर्द मौजूद हैं। चीन म्यांमार में अराकान तट पर क्युक्यपु बंदरगाह पर नियंत्रण पाने और नहर (क्रा नहर), जो अंडमान सागर को थाईलैंड की खाड़ी से जोड़ती है, की योजना बनाकर भारत को बाहर करने की तैयारी कर रहा है। ग्वादर (पाकिस्तान) और हम्बनटोटा (श्रीलंका) बंदरगाहों पर चीन के मौजूदा नियंत्रण के साथ, यदि चीन को अपने प्रयासों में सफल होता है, तो वह इस हिंद महासागर क्षेत्र में एक अजीब स्थिति प्रदान कर सकता है। 2019 में इस तरह के कदमों का मुकाबला करने की भारत की क्षमता अत्यंत सीमित प्रतीत होती है।

इस वर्ष में चीन-पाकिस्तान की दोस्ती और समेकन देखने को ज्यादा मिलेगा। 2018 के दौरान, पाकिस्तान ने अफगानिस्तान में चीन की भागीदारी को आसान बनाया और साथ ही रूस को अफगान तालिबान के साथ बातचीत करने के लिए एक पक्ष बनाने में भी सफल रहा। 2018 में चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे (CPEC) को काफी तूफानों का सामना करना पड़ा था, जिसका 2019 में भी कायम रहने की संभावना व्यक्त की जा रही है।

दूसरी ओर, भारत-पाकिस्तान संबंधों में सुधार की संभावनाएं बेहद सीमित हैं। सीमा पार से आतंकी हमले जारी रहने की संभावना है, क्योंकि लश्कर-ए-तैयबा और जैश-ए-मोहम्मद जैसे आतंकी समूहों के प्रायोजन भी हैं। भारत को पाकिस्तान के अलावा, अमेरिका, चीन और रूस सहित सभी देशों द्वारा अफगान तालिबान के साथ बातचीत से बाहर रखा गया है। भारत के लिए यह स्थिति बहुत ही खतरनाक साबित हो सकती है।

भारत के लिए मिश्रित चुनौतियाँ

शेष दक्षिण एशिया में भारत के लिए दृष्टिकोण भी मिश्रित हैं। 2018 के अंत तक, भारत मालदीव में अपनी स्थिति को पुनः प्राप्त कर सकता है। यह भूटान में अपने प्रभाव को फिर से स्थापित करने में भी सफल रहा है। बांग्लादेश में आम चुनाव के बाद प्रधानमंत्री के रूप में शेख हसीना की वापसी एक स्वागत योग्य राहत रही है। फिर भी, भारत को आर्थिक और सैन्य सहायता के प्रस्ताव के साथ नेपाल, बांग्लादेश सहित अपने पड़ोसी देशों को दूर करने से चीन को रोकने के लिए 2019 में कड़ी मेहनत करने की आवश्यकता होगी। भारत को अपने सभी संसाधनों का उपयोग बांग्लादेश को वहां के कट्टरपंथी इस्लामी समूहों के प्रभाव को सीमित करने में बांग्लादेश की मद्द करने के लिए भी करना होगा।

आंतरिक सुरक्षा भी अपेक्षाकृत अधिक उथल-पुथल रही है। पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवादी हमले बहुत कम थे, लेकिन 2019 में आगे क्या होता है, यह शायद ही कोई बता सकता है। 2018 में वामपंथी उग्रवादी हिंसा में मामूली वृद्धि हुई, लेकिन यह आंदोलन झारखंड, छत्तीसगढ़, आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, ओडिशा में एक प्रमुख क्षेत्र के भीतर प्रसारित रहा। वैचारिक रूप से, आंदोलन जीवंत बना हुआ हैऔर 2019 में,वैचारिक और आतंकवादी दोनों पहलुओं से चतुराई से निपटने की आवश्यकता होगी।

अधिक चुनौतीपूर्ण आंतरिक सुरक्षा समस्याएं कश्मीर और पूर्वोत्तर की होंगी। 2018 में, कश्मीर की स्थिति तेजी से बिगड़ी है और वर्ष 1989 के बाद से हिंसा के कुछ उच्चतम स्तर देखे गए हं। उनके परिवारों को निशाना बनाने के साथ-साथ सुरक्षा बलों के जवानों की संख्या में फिर से तेजी से उछाल आया है।

जम्मू और कश्मीर प्रशासन और आतंकवादियों के बीच गतिरोध का समाधान होने की संभावना नहीं है। राष्ट्रपति शासन ने संघर्षग्रस्त स्थिति को हल करने में बहुत कम प्रगति की है। मिलिटेंट आउटफिट्स, जैश-ए-मोहम्मद और हिजबुल मुजाहिदीन, कभी भी सक्रिय हो जाते हैं। अधिक शिक्षित स्थानीय लोग उग्रवादियों के साथ जुड़ रहे हैं। इसके अलावा, इस्लामिक स्टेट की उपस्थिति को भी नकारा नहीं जा सकता है। जहां तक 2019 का संबंध है, इसके परिणाम विचारणीय हो सकते हैं।

2019 में भारत के सामने आने वाले अन्य प्रमुख आंतरिक सुरक्षा खतरों का कारण पूर्वोत्तर में जातीय उप-राष्ट्रवाद का पुनरुत्थान है। यह कुछ समय से काफी तेजी से बढ़ रहा है, जो अब नागरिकता (संशोधन) विधेयक के अधिनियमित होने के बाद और तेजी से बढ़ने लगा है। विधेयक ने कई आशंकाओं को जन्म दिया है, जिससे इस क्षेत्र की यथास्थिति में काफी बदलाव आएगा। संशोधन ने पूरे पूर्वोत्तर में लोगों के विशाल क्षेत्रों को एकजुट करने में मद्द की है। हाल ही में अधिनियमित अधिनियम की विभ. ाजनकारी क्षमता, एक चुनावी वर्ष में विशेष प्रतिध्वनि होगी। यह 2019 में संवेदनशील और सावधानीपूर्वक संचालन की मांग करेगा।

दो अन्य मुद्दे, जिन्होंने 2018 में देश को हाशिये पर रखा अर्थात् किसानों और दलितों में व्याप्त अशांति, 2019 के शुरू होते ही और अधिक गंभीर हो सकते हैं। दोनों मुद्दे विशेष रूप से चुनावी वर्ष में आग भड़काने का काम कर सकते हैं। इसके अलावा, इस बात के भी साक्ष्य बहुत कम हैं कि अशांति के कारणों पर सावधानीपूर्वक विचार किया जा रहा है।

गंभीर होती बाहरी और आंतरिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए, 2019 में शांति मायावी साबित हो सकती है। कूटनीतिक मोर्चे पर, भारत को और अधिक निपुण होने की आवश्यकता है। आंतरिक स्थिति को बहुत अधिक समझ के साथ निपटाना होगा।

क्वाड

क्या है?

- क्वाड के चतुर्भुज गठन में जापान, भारत, संयुक्त राज्य अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया शामिल हैं और इस क्षेत्रीय गठबंधन को ही 'क्वाड' कहा जाता है।
- इस विचार को पहली बार जापानी प्रधानमंत्री शिन्जो आबे ने 2007 में पेश किया था।
- जिस प्रकार से दो देशों के बीच द्विपक्षीय संबंध और तीन देशों के मध्य त्रिपक्षीय संबंध बनते हैं, ठीक उसी प्रकार वार्तालाप और सहयोग बढ़ाने के उद्देश्य से चार देशों का एक मंच पर आना एक बेहतर प्रयास है।
- इसका उद्देश्य पूर्ववर्ती 'एशिया-प्रशांत संकल्पना' के स्थान पर 'हिंद-प्रशांत संकल्पना' को स्वरूप देना है।
- यह चतुष्कोणीय गठबंधन इस सामरिक क्षेत्र को चीन की बढ़ती सैन्य उपस्थिति के बीच 'मुक्त' रखने में महत्त्वपूर्ण साबित होगा।

भारत के लिए महत्त्वपूर्ण क्यों?

- क्वाड को फिर से जिंदा करने की कई वजहें हैं। चीन के साथ हुए डोकलाम विवाद और बाद में 'बेल्ट रोड इनेशिएटिव' ने भारत को इसके लिए प्रोत्साहित किया, तो ऑस्ट्रेलिया और कुछ हद तक जापान के लिए ऐसा करने की बड़ी वजह द्विपक्षीय गठबंधन के प्रति डोनाल्ड ट्रंप सरकार की प्रतिबद्धता और 'क्वाड' के वायदों के तहत उन्हें मजबूत बनाने की मंशा है।
- अमेरिकी विदेश मंत्री रेक्स टिलरसन की यात्रा से भी यही लगता है कि वाशिंगटन की मंशा इस क्षेत्र में अधिक से अधिक संबंध मजबूत करने की है।
- यह नाटो की तरह का संगठन हो सकता है, जिसे 'रूस को बाहर रखने, अमेरिका को शामिल करने और जर्मनी का कद छोटा करने में' सफलता मिली थी। इसी कारण कई पर्यवेक्षकों ने इस नए संगठन को चीन को घेरने के एक औजार के रूप में परिभाषित किया है।
- हालांकि, एक प्रभावशाली संगठन बनने के लिए इसे नाटो के नक्शेकदम पर भी चलना चाहिए, यानी उसे 'चीन को बाहर रखना होगा, अमेरिका को शामिल करना होगा और जापान को कम महत्व देना होगा'।
- यह भी सुनिश्चित करना होगा कि इस क्षेत्र को लेकर वाशिंगटन की प्रतिबद्धता महज कहने भर की न रह जाए, बल्कि वह इसके लिए गंभीर भी बने।

क्वाड (QUAD) के संभावित लाभ

- चीन की आक्रामक नीतियों पर अंकुश लगाने के उद्देश्य को सफल बनाया जा सकेगा।
- यह साझेदारी वैश्विक शक्ति समीकरण पर गहरा असर डाल सकती है।
- यह एक-दूसरे के हितों की रक्षा के साथ-साथ परस्पर समृद्धि में भी अपना योगदान दे सकते हैं।
- मध्य एशिया के तेल और गैस के भंडारों और पूर्वी यूरोप के बाजारों तक हमारी आसान पहुँच सुनिश्चित हो सकेगी।
- यह गठबंधन पूर्ववर्ती एशिया-प्रशांत संकल्पना के स्थान पर हिंद-प्रशांत संकल्पना की बात करता है और इसी को मजबूती देने के उद्देश्य से इसकी परिकल्पना की गई है।

इंडो-पैसिफिक

- इंडो-पैसिफिक शब्द का इस्तेमाल समुद्री जीवविज्ञानी उष्णकटिबंधीय हिंद महासागर से लेकर पश्चिम व मध्य प्रशांत महासागर तक पसरे पानी के विस्तार को परिभाषित करने के लिए करते रहे हैं।
- मगर 21वीं सदी की शुरुआत में इस शब्द को भू-राजनीतिक शब्दावली में जगह मिली और यहां यह अपनी वैज्ञानिक परिभाषा से कहीं अधिक विवादास्पद साबित हुआ।
- यह क्षेत्र 20वीं सदी में विभिन्न देशों और एक ही मुल्क के अलग-अलग राज्यों के बीच खूनी संघर्षों का गवाह तो बना ही, विफल, संभावित और स्थापित परमाणु शक्ति संपन्न देशों के बीच निकट भविष्य में तनाव के बीज भी यहां खूब दिखते हैं।
- एक मजबूत सुरक्षा व्यवस्था के न होने से यहां ऐसे तनाव की आशंका ज्यादा है। इस लिहाज से चतुष्कोणीय सुरक्षा वार्ता (क्वाड) को फिर से जीवंत करने की कोशिशों को देखें, तो यह एक उल्लेखनीय कदम है।

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. **'क्वाड' के सन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-**

   1. इसके गठन में मुख्य रूप से जापान, भारत, संयुक्त राज्य अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया शामिल हैं।
   2. इसका उद्देश्य पूर्ववर्ती 'एशिया-प्रशांत संकल्पना' के स्थान पर 'हिन्द-प्रशांत संकल्पना को स्वरूप देना है।

   उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

   (a) केवल 1
   (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों
   (d) न तो 1 और न ही 2

1. **Consider the following statements regarding 'Quad'-**

   1. Mainly Japan, India, United states of America and Australia are included in its establishment.
   2. Its objective is to give shape to the concept of ' Indo-Pacific' at the place of previous 'Asia-Pacific concept'.

   Which of the above statements is/are correct?

   (a) Only 1
   (b) Only 2
   (c) Both 1 and 2
   (d) Neither 1 nor 2

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्रश्न: "वर्तमान में विश्व के स्तर पर बदलते परिदृश्य को देखते हुए आने वाले समय में भारत को चुनौती भरी बाहरी और आंतरिक स्थिति का सामना करना पड़ सकता है।" इन सभी स्थितियों से निपटने के लिए कूटनीतिक मोर्चे पर क्या सुधार करने की आवश्यकता है? चर्चा कीजिए।

(250 शब्द)

Q. "India may have to face external and internal challenges in future considering the changing scenario of the world at present." What reforms need to be done to tackle all these situations? Discuss.

(250 Words)

नोट : 30 जनवरी को दिए गए प्रारंभिक परीक्षा (संभावित प्रश्न) का उत्तर 1(c) होगा।

Committed To Excellence